ली क्वोवन

(१९३० -   )

ली क्वोवन का जन्म १९३० में शाङहाए में हुआ। उन्होंने १९४७ में नानचिङ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में दाखिला लिया और उसके दो वर्षों बाद केंद्रीय नाट्य संस्थान के अनुसंधान विभाग में काम किया। १९५२ में वह चीनी जन स्वयंसेवकों में सम्मिलित हुए और उन्होंने सेना कला मंडली में लेखक के तौर पर काम किया। १९५४ में उन्हें रेलवे मजदूरों के ट्रेड यूनियन के प्रचार विभाग के साहित्य संपादक के पद पर नियुक्त किया गया। तीन वर्षों के बाद १९५७ में उन्हें रेलवे से संबंधित इंजीनियर विभाग में शारीरिक श्रम के लिए लंबे समय तक बाहर भेज दिया गया। १९७९ में फिर से चीनी रेलवे कला मंडली में लेखक के तौर पर उनकी नियुक्ति की गई।

१९५७ में प्रकाशित उनकी कहानी "पुनर्चुनाव" से उन्हें ख्याति मिली। इसके बाद १९७९ तक उन्होंने कुछ नहीं लिखा। १९७९ से उनकी अनेक कहानियाँ प्रकाशित हुईं, जिनमें "बस फ़नश्वेइलिङ पहुंची" और "खोखली घाटी और मनोहर ऑर्किड" अत्यंत चर्चित हुईं। उनका उपन्यास "जाड़े में वसंत" १९८१ में प्रकाशित हुआ।

चन्द्रग्रहण

ली क्वोवन

१

ई रू ने बस की खिड़की से बाहर देखा। थाएहाङ पहाड़ का सुबह का तुषार पर्वतश्रेणियों, जंगलों और फसल काट ली गई नंगे खेतों पर बिखरा हुआ था। पतझड़ का खाली और उदास दृश्य किसी नमक के तालाब के क्षारीय किनारे की याद दिला रहा था, बाहरी दृश्य की निर्जनता किसी के उत्साह को ठंडा करने के लिए पर्याप्त थी। सड़क के किनारे लगे परसीमन के पेड़ों के अलावा जीवन का नामोनिशान न था, बकरियां भावशून्य दृष्टि से गुजरती बस को देख रही थीं।

ई रू को अफसोस हुआ कि इतनी हड़बड़ी में उन्हें नहीं निकलना था। उन्हें पहले पत्र या तार भेज देना चाहिए था! पर किसके पास? शायद क्वो चाची अब तक गुजर चुकी हों!

बस जैसे-जैसे मंजिल के करीब पहुंच रही थी, उनकी उदासी बढ़ती जा रही थी। उन्हें अपनी आत्मिक दुनिया की तलाश में पुराने क्रांतिकारी आधार क्षेत्र में नहीं आना चाहिए था! संवेदनाओं के वशीभूत होकर उन्होंने मूर्खतापूर्ण हरकत की है, क्योंकि लंबे समय से बिछुड़े और खोए अतीत को फिर से पाना असंभव था। बस एस. काउंटी पहुंची, पर वह अभी भी निश्चित नहीं कर पा रहे थे कि वह यहां किस चीज की तलाश में वापस आए हैं। यह सही है कि वह अपने खोए प्रेम को नहीं भुला सकते थे, पर कुछ दूसरी बातों को याद करने की कोशिश ने उन्हें और उलझा दिया। वह अपनी मनोदशा नहीं समझ पा रहे थे।

वह बस-स्टेशन के फाटक से बाहर निकलकर थोड़ी देर चौराहे पर खड़े रहे। तेज पहाड़ी हवा पूरे बदन को कंपा रही थी। पहाड़ी इलाके की तीव्र ठंड के कारण ड्राइवरों ने पहले ही बकरी के रोओं के अस्तर वाले कोटों को उलट कर पहन लिया था। वह उनकी तरफ गए। उन्होंने उनसे पूछा कि यदि वे कमल तालाब की ओर जा रहे हों तो उन्हें साथ ले जा सकते हैं या नहीं? पर उनके सवाल पर ड्राइवरों ने ठहाका लगाया। उन्हें स्वयं भी आश्चर्य हुआ। पहाड़ी लोगों के हंसी-मजाक का स्तर विचित्र था। पुराने क्रांतिकारी आधार क्षेत्र के इन प्रिय और आदरणीय देहाती निवासियों के परिहास से वह परिचित थे। उन्होंने उनसे कहा, "बड़े भाई! हमें आपका पैसा नहीं चाहिए! जाओ, जाकर आठ माओ का टिकट खरीदो और चार चक्कों वाले लोहे के जानवर पर चढ़ जाओ, दोपहर के खाने के समय तक वहां पहुंच जाओगे।"

ई रू हंसे। जब वह एस. काउंटी से गए थे, उस समय बस-स्टेशन नहीं था। अब कमल

तालाब या संभवतः छोटे पहाड़ी गांव याङच्याओनाओ तक सड़क जाती थी, उन्हें इसी गांव में जाना था।

टिकट खिड़की पर आठ माओ देते समय भी वह हिचक रहे थे कि वहां जाएं या न जाएं? अंत में उन्होंने टिकट लिया और वहां जाने का आखिरी फैसला कर लिया, हालांकि वह अभी भी साफ-साफ नहीं बता सकते थे कि वह क्यों याङच्याओनाओ जा रहे हैं। वहां पहुंचने के बाद उन्हें कैसी स्थिति का सामना करना होगा? क्या वहां उन्हें समझ में न आने वाली कोई चीज मिल सकेगी?

इस जगह आने की उनकी पुरानी आकांक्षा थी, यदि नहीं आते तो ऐसा लगता कि कुछ खो गया है। बस के जाने में अभी समय था, उन्होंने टिकट जेब में रखा और संकरी गली शिक्वान से निकले। अब इस गली का नाम सिशिन मार्ग हो गया था। संकरी गली से वह शहर में आए। अतीत में पत्थर की इस ऊबड़-खाबड़ सड़क पर आज के जनरलों या मंत्रियों का तांता लगा रहता था, वे घोड़ों पर या पैदल शहर आते थे। एस. काउंटी का भाप से पकाया कोदों आज निगलने में कठिन होने के बावजूद उन दिनों में उन्हें अत्यंत स्वादिष्ट लगता था। ई रू को हालांकि भूख नहीं लगी थी, पर उन्होंने कुछ खा लेना उचित समझा, क्योंकि बस की यात्रा और कुछ घंटों की थी और संभव था कि कमल तालाब पहुंचने तक दोपहर के खाने का समय निकल जाए। आखिरकार मुख्य चोटी पार कर याङच्याओनाओ जाने के लिए भी शक्ति की जरूरत थी।

अचानक उनके दिमाग में कुछ कौंधा। उन्हें याद आया कि शिक्वान गली में एक मुस्लिम रेस्तरां था, जहां का मटन सूप अत्यंत प्रसिद्ध हुआ करता था। १९४७ में जब वह और क्षेत्रीय प्रचार विभाग के निदेशक पी चिङ एस. काउंटी पहली बार आए थे तो निदेशक ने उनके कंधे को थपथपाकर कहा था, " ई रू! आज तुम मेरे मेहमान हो। मैं शिक्वान के मटन सूप के लिए तुम्हें आमंत्रित करना चाहता हूं।" निदेशक पी चिङ की याद आते ही उनके होंठों पर मुस्कराहट तैर गई। उस दिन निदेशक पी चिङ ने भेड़ के रोएं से बने कागज पर छपे सीमांत क्षेत्र के नोटों का बड़ा बंडल मेज पर फेंका था। मेज पर रखी सिरके और चटनी की शीशियां हिलने लगी थीं। उन्होंने आदेश दिया था, "खूब मसाले डालकर दो बड़े कटोरों में सूप ले आओ।" सचमुच उतना स्वादिष्ट सूप उन्होंने पहली बार पिया था! मटन सूप उन्हें इतना अच्छा लगा था कि सूप में डाली भेड़ की सारी अंतड़ियां निगलने के बाद ही वह उसके स्वाद की प्रशंसा कर पाए थे।

पी को पेट की बीमारी थी, इसलिए उन्होंने ज्यादा खाने की कोशिश नहीं की, पर ई रू ने पेटभर खाने के बाद होंठों को चूसा। "अबे जाहिल, मैं तुम्हारे लिए दूसरा कटोरा मंगवाता हूं," वह हंसते हुए बोले। हंसने के कारण उनकी आंखें सिकुड़कर छोटी हो गई थीं। ई रू ने लज्जित महसूस किया। बैरा सूप से भरा दूसरा कटोरा मेज पर रखता हुआ बोला, "आठवीं राह सेना के छोटे साथियो, आप अपना ख्याल रखें।" उन्होंने अपना सिर झुकाया और थोड़ी देर में कटोरे का सूप उनके पेट में उतर गया। माथे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा आईं।

ड्राइवरों और खलासियों की पेशेवर पेट की बीमारी से ग्रस्त होने के बावजूद ई रू ने मटन सूप चखने का फैसला किया।

एस. काउंटी थाएहाङ पहाड़ी इलाके का एक छोटा कस्बा था, नक्शे पर एक बिंदी के इतना छोटा था, शायद सामने आने में उसे शर्म महसूस होती थी। पहाड़ी लोग अपने इस छोटे कस्बे के बारे में ज्यादा नहीं सोचते थे। ई रू ने शिक्वान से तुङक्वान के कई चक्कर लगाए। पर उन्हें मुस्लिम रेस्तरां नहीं मिला। उन्होंने पके शकरकंद बेचने वाले से पूछा। उसके झुर्रीदार चेहरे पर अन्य पहाड़ी लोगों की तरह कोयले की गर्द जमी हुई थी। उसने सोचा ई रू उसे जानबूझकर बुद्धू बना रहे हैं। इसलिए उसने जवाब दिया, "मुस्लिम रेस्तरां? मेरी दुकान सरकारी है और मजदूरों, किसानों व व्यापारियों की साझेदार दुकान है। हमारे ब्रिगेड ने यह नया प्रयोग किया है। मैं इसके लिए सही शब्द नहीं बता सकता। पर यह निजी व्यापार नहीं है। अगर कुछ खरीदना है तो अच्छी बात है, वर्ना अपना रास्ता नापो। मुझे तुच्छ मत समझो!"

उसने सोचा कि ई रू उसे बुद्धू बनाना चाहते थे और जानबूझकर उसे निजी रेस्तरां का मालिक समझकर बातें कर रहे हैं। पर जब ई रू ने दो माओ से दो शकरकंद खरीदे, तब उसे महसूस हुआ कि उससे गलती हुई, देश के दूसरे हिस्से से आया यह आदमी सचमुच मुस्लिम रेस्तरां के बारे में जानना चाहता है। उसने लंबी सांस ली और बताया, "मुस्लिम रेस्तरां को एक सहकारी उद्यम में शामिल कर लिया गया। हां, मेरी दुकान की ही तरह वह दस साल पहले बंद हो गया। मैंने अभी-अभी फिर से व्यवसाय आरंभ किया है। हम लोगों को मजदूर, किसान व व्यापारियों' के सहयोग से चलाए गए दुकान उत्पादक दल के लिए मुनाफ़ा हो रहा है।" इस पहाड़ी बूढ़े की ही तरह ई रू ने भी पत्रकार का पुराना पेशा फिर से आरंभ किया था। उन्हें एड्रियन सागर से आए 'मजदूर, किसान व व्यापारी साझेदार दुकान' शब्द सुनकर अत्यंत खुशी हुई। अलग-थलग और पिछड़े कस्बे में जिस तरह आरंभिक शरद की सुबह के सूरज की रश्मियां नए दिन का संचार कर रही थीं, वैसे ही नयी चीजें नयी आशाएं लाएंगी। संभव है कि पके शकरकंद बेचनेवाला साझेदार दुकान की सहायता से आगामी कुछ वर्षों में मजदूर, किसान व व्यापारी साझेदार आधुनिक उद्यम का अग्रदूत बन जाए। ई रू अपने हाथ में पका शकरकंद लिए वहां से आगे बढ़े। शकरकंद बेचनेवाला फटी आवाज में चिल्ला रहा था, "गर्म, शहद की तरह मीठा शकरकंद!" शायद लंबे समय से इस व्यवसाय से अलग रहने के कारण उसकी आवाज लगाने की आदत छूट गई थी; उसकी आवाज सूखी और फटी लग रही थी। ई रू ने सोचा कि अनेक वर्षों से अभ्यास छूट जाने के कारण कहीं वह भी तो प्रभावित नहीं हुए हैं। जब उन्होंने फिर से कलम उठाई और पत्रकारिता का पुराना पेशा आरंभ किया, क्या वह छठे दशक का पैनापन अपने लेखन में हासिल कर सके?

वह बस में आकर बैठ गए। चलने के साथ ही बस के इंजन की तेज घर्र-घर्र आवाज आने लगी।

ई रू ने पहली नजर में ही भांप लिया कि यह बस पुरानी लॉरी की मरम्मत कर बनाई गई है। पुरानी बस सीधी चढ़ाई पर चढ़ रही थी और बस की महिला चालक बस को ऊपर चढ़ाने की हर संभव कोशिश कर रही थी। उन्हें मालूम था कि थोड़ी देर में सिलिंडर में कोई

गड़बड़ी होगी और वाष्पित्र भी मैला होगा। पर बीस वर्षीया महिला चालक उत्साही और कर्मठ दिख रही थी। उसके छोटे बाल, गर्दन से लिपटा सफेद स्कार्फ और सूरज की रोशनी व पसीने से गंदी हुई उसकी फूलदार कमीज उन्हें किसी पुराने परिचित की याद दिला रही थी। उन्होंने बस की महिला चालक को पीछे से ध्यानपूर्वक देखा। वह धूप का चश्मा पहनने और रौब गांठने वाली पेशेवर महिला चालकों से अलग देहाती लड़की की तरह लग रही थी। शायद उसे अभी-अभी ड्राइवरी लाइसेंस मिला था। बस चलाने के उसके ढंग से ई रू ने अनुमान लगाया कि वह अवश्य ही "तुङफाङहुङ" और "थ्येन्यू ५५" जैसे ट्रैक्टर चला सकती है। उसके घने काले बाल, मजबूत कद-काठी और गोल कंधे उनके दिल की गहराई में बसी एक युवती की याद दिला रहे थे। उसने उनकी यादों की किताब में सबसे सुंदर अध्याय जोड़े थे और उसी की वजह से इन सारे वर्षों में वह महसूस करते रहे थे कि जिंदगी अभी भी जीने लायक है। वह युवती याङच्याओनाओ की उनकी न्यून्यू थी।

क्या वह उसी के कारण वापस आये थे? शायद हां, या सिर्फ उसी के लिए नहीं? उन्हें अपने दिल पर भारी बोझ महसूस हुआ था। फिर किसी तरह आखिरकार उन्हें यह महसूस हुआ कि उनकी इस थकान भरी यात्रा का एक उद्देश्य याङच्याओनाओ की अपनी न्यून्यू को खोजना है। बस की खिड़की से शांत संवेदनशील किसान युवती जैसी कमल तालाब की मुख्य चोटी धुंधले बादलों के बीच दिखाई पड़ी। चोटी देखकर उन्हें महसूस हुआ कि वह घर वापस आ रहे हैं। पार्टी संगठन की तरफ से पार्टी की पुनः सदस्यता प्राप्त होने की औपचारिक सूचना पाकर भी उन्हें ऐसा ही महसूस हुआ था और सचमुच पार्टी उनके घर के समान ही तो थी। पर इन बाईस वर्षों की अवधि के बाद न्यून्यू इन दिनों क्या कर रही होगी? ई रू अत्यंत भावुक व्यक्ति थे और यही उनकी भयानक कमजोरी थी। उन्होंने जान बचाने और सच्चे दिल से प्यार करने वाली न्यून्यू के प्रति आभार प्रकट करने के लिए यहां आने का फैसला किया था। और यही वह बात थी, जो उन्हें ई रू बनाती थी। शायद उनके लौटने से उसकी मानसिक शांति भंग हो, क्योंकि अब तक वह अनेक बच्चों की मां बन चुकी होगी! इसी कारण पूरे रास्ते वह स्वयं को दोषी ठहराते रहे और अपनी अदूरदर्शिता पर पश्चाताप करते रहे। पर अब मुख्य चोटी उन्हें आमंत्रित कर रही थी। आखिरकार उन्होंने सोचा कि उनका फैसला सही था। जल्द ही वह अपने चाहने वालों के बीच होंगे। न्यून्यू, मां की तरह देखभाल करने वाली चाची क्वो और गांववासी। इसी गांव में तो वह बाल सिपाही से आठवीं राह सेना के सिपाही बने थे। उन्हें सबका प्यार मिला था। हां, अलग-अलग प्यार का अनुभव किया था उन्होंने, न्यून्यू का प्यार, क्वो चाची का प्यार और आठवीं राह सेना व कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति जनता का प्यार। वह अपने खोए प्यार की तलाश में वापस आए थे। याङच्याओनाओ में उन्होंने पी चिङ के साथ पहले छापामार युद्ध किया और फिर भूमि सुधार और राजनीतिक सत्ता की स्थापना में भाग लिया था।

वह सोच रहे थे, "न्यून्यू! क्या तुम्हें अभी भी हाथ में कारबीन लिए बाल सिपाही की याद है?"

वह इन्हीं सोचों में डूबे हुए थे और बस घर्र-घर्र की आवाज के साथ कमल तालाब कम्यून

की तरफ जा रही थी। घर्र-घर्र की आवाज में यात्री ऊंघ रहे थे, शायद यह उनके लिए मधुर संगीत था।

२

ई रू ने कभी कल्पना नहीं की थी कि वह एक दिन छाएदाम से इस कस्बे में लौटकर आएंगे।

बहुत पहले छोड़कर गए भूरी इमारत के सामने वह खड़े थे। समय के साथ इमारत का रंग और भूरा हो गया था। एक नजर इमारत को देखने के बाद वह तेजी से सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आए। उन्होंने बाईस वर्षों के बाद पहली बार उस शीशे के दरवाजे को खोला और महसूस किया कि वह वही उलझे लंबे बालों और ढीले कपड़ों वाले ई रू हैं। दरवाजे के शीशे में एक जोड़ी निर्दोष आंखें सुखद आभा के साथ चमक रही हैं। वह मुस्कराते हुए पुराने परिचित चेहरों को खोज रहे थे, पर कोई नहीं मिला। उन्होंने दूसरे दरवाजों को खोलकर भी झांका, हर जगह से ठंडे स्वर में एक ही सवाल सुनने को मिला, "आप किसे खोज रहे हैं?" या फिर कमरे के अंदर घूरती निगाहें मिलीं।

वह ऊपर अपने भूतपूर्व संपादक के कार्यालय में गए, वहां आखिरकार उन्हें कुछ परिचित चेहरे मिले। लेकिन उनमें से किसी ने उन पर ध्यान नहीं दिया। जिस मेज पर वह काम करते थे, वहां एक औरत बैठी थी। उसने उन्हें चौंककर देखा। पर वह भी उस औरत को नहीं पहचान पाए। उसने सुनहरे रंग का बड़े फ्रेम का आयातित चश्मा पहन रखा था; चश्मा उसके एक-तिहाई चेहरे को ढक रहा था। उसके घूर कर देखने से उन्होंने घबराहट महसूस की। वह छठे दशक में निदेशक पी की बार-बार सुनाई गई उद्घोषणा ऊंचे स्वर में दोहराना चाहते थे, "यदि आपने अखबार के कार्यालय को यामन (पुराने चीन का सरकारी दफ्तर) का रूप दे दिया तो आप जनता की आवाज नहीं सुन पाएंगे। आप जनता से मिलें, जैसे पुराने समय में मुक्त क्षेत्रों में मिला करते थे, उनके साथ एक ही खाङ (उत्तर चीन में कच्ची ईंटों से बनाए गए पलंग जिन्हें गर्म करने के लिए उनके अंदर ही आग जलायी जा सकती है) पर सोएं, आप उनका हिस्सा बन जाएं..." ई रू ने मन ही मन सोचा, "कॉमरेड, आप ऐसे क्यों घूर रही हैं! मैं आपको निगलने या आपका पर्स छीनने नहीं जा रहा हूं!"

"ई रू, तुम?" किसी ने आश्चर्यमिश्रित खुशी के साथ पूछा।

"हां, मैं। तीन फीट मोटी बर्फ!"

कई लोग हंस पड़े। उन दिनों उन्हें सभी "तीन फीट मोटी बर्फ" कहकर पुकारते थे। इस नाम से वह सहकर्मियों के अलावा अपरिचित लोगों के बीच भी जाने जाते थे। ऐसा कहा जाता था कि जब ई रू सोलह या सत्रह वर्ष के थे, लगभग कारबीन इतने लंबे, उन्होंने *शानशी-छाहार-हपेइ दैनिक* के युद्ध समाचार का संपादन किया था। छठे दशक में वह दैनिक अखबार के एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हो गए थे। उन वर्षों में उन्होंने बहुत यात्राएं कीं और अपने संस्मरण लिखे। सरकारी योजनाओं में उनकी विशेष दिलचस्पी थी; वह योजनाओं के बारे में उत्साह और विश्वास के साथ लिखते थे। उन्हें पानमुनजोम की शांति वार्ता की रिपोर्टिंग के

लिए कोरिया भी भेजा गया था। युवा पत्रकार उन्हें अनुभवी और दक्ष पत्रकार की नजर से देखते थे।

ई रू "पेशेवर संवाददाता" रह चुके थे और अपरिचितों को भी आसानी से दोस्त बना लेने में माहिर थे। उस पुराने कमरे में उन्होंने सभी नए दोस्तों से एक-एक कर हाथ मिलाया। जब वह खिड़की के पास रखी मेज की तरफ बढ़े तो वहां बैठी छरहरी औरत उनकी तरफ मुड़ी। जैसे ही उसने सुनहरे फ्रेम का चश्मा उतारा, ई रू ने परिचित आकर्षक चेहरे को पहचान लिया।

"लिङ सुङ!..."

वह चुप रही और धीमे से मुस्कराई। उसकी मुस्कराहट से स्पष्ट था कि दोनों पुराने परिचित हैं और मिलने की खुशी व्यक्त करने के लिए शब्दों की जरूरत नहीं है। उन्हें याद आया, बीसेक वर्ष पहले अपनी युवावस्था में भी वह इसी तरह प्यार से मुस्कराती थी। वह उसकी पांडुलिपि परिमार्जित कर या लगभग फिर से लिखकर प्रेस में भेजते थे तो वह इसी तरह मुस्कराकर कृतज्ञता व्यक्त करती थी। फिर काम समाप्त हो जाने के बाद उसने बताया था कि दैनिक अखबार के कार्यालय में क्या गुल-गपाड़ा चल रहा था। उसके सुंदर बाल उन्हें अच्छे लगते थे। चांदी की घंटियों की तरह उसकी सुमधुर हंसी उन्हें आकर्षित करती थी और इत्र की खुशबू उन्हें उत्तेजित कर देती थी। वह अपने पर संयम रखते थे; उन्हें उसके आकर्षण से पैदा हुई अपनी भावनाएं अच्छी नहीं लगती थीं पर वे उनसे बच नहीं पाये। आखिरकार वह उनके अच्छे दोस्त की पत्नी थी। प्रसिद्धि की होड़ में लगी हर औरत की तरह वह भी एक प्रसिद्ध पत्रकार बनना चाहती थी।

संपादकीय कार्यालय की सभी औरतों के कपड़ों से अधिक महंगे और भड़कीले कपड़े लिङ सुङ के थे। पर जब उसने चश्मा उतारा, ई रू ने उसके चेहरे पर पड़े समय के निशान देखे, आंखों के किनारे हल्की झुर्रियां थीं। फिर भी वह जानती थी कि स्वयं को कैसे सजाया जा सकता है। आकर्षक कपड़ों में वह अपनी उम्र से कम लग रही थी, खासकर उसकी पुरानी मुस्कराहट उसकी उम्र पर पर्दा डाल देती थी।

१९५७ में लिङ सुङ के पति की मृत्यु के बाद पूरे कार्यालय में ऐसा कोई नहीं था, जो उनके और लिङ सुङ के प्रेम प्रसंग के बारे में नहीं जानता था। ऐसे समाचार यों भी जल्दी फैलते हैं। ई रू ने उस समय परवाह नहीं की थी।

"कैसी हो?" उन्होंने प्यार से हाथ मिलाते हुए पूछा।

वह धीरे से मुस्कराई। उसने मुस्कराहट से व्यक्त किया कि शब्दों की अपेक्षा खामोशी भावनाओं को अच्छी तरह व्यक्त कर सकेगी। पर ई रू ने मुड़कर दूसरों से पूछा, "कॉमरेड पी चिङ का कमरा किधर है?"

उनके ठिकाने के बारे में लोगों की अलग-अलग राय थी। कई दिनों से उन्होंने अपने नेता को नहीं देखा था। इधर लोगों के बीच अखबार की प्रतिष्ठा बढ़ी थी। बिक्री और व्यक्तिगत ग्राहकों की बढ़ोतरी से स्पष्ट था कि प्रकाशन में सुधार के नतीजे अच्छे रहे थे। पर कॉमरेड

पी चिङ कहां थे? क्या वह कहीं लोगों से अखबार के लिए लिखने का आग्रह करने गये थे?' लिङ सुङ को अवश्य मालूम होगा।

"हो दीदी कह रही थीं कि पी कहीं बाहर गए हैं।" यह कहने के साथ उसने अपने कटे घुंघराले बालों को सहलाया। उसने पूछा, "क्या आपको मालूम है कि आजकल वे लोग कहां रहते हैं? उन्होंने अपना मकान बदल लिया है और उसे खोज लेना आसान काम नहीं है। देखिए, यह लेख मैंने अभी-अभी पूरा किया है..." उसने 'चंद्रग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या' शीर्षक लेख सहसंपादक की तरफ बढ़ाया।

ई रू ने सोचा, शायद अभी हाल ही में चंद्रग्रहण लगा होगा। इतने वर्षों के बाद भी अभी लिङ सुङ उन्हीं बंधे-बंधाये विषयों पर लिख रही थी। ऐसा आभास हुआ कि उसका बौद्धिक विकास बहुत थोड़ा हुआ है और वह अपने कटे घुंघराले बालों पर ज्यादा समय बर्बाद करती है। लिङ सुङ ने ई रू की तरफ देखा। उसकी आंखों में चमक और होंठों पर कंपन था। वह मुस्कराई तो उसके सफेद दांत दिखे। उसकी अर्थ-भरी मुस्कराहट से स्पष्ट था, "आप मुझे अपने साथ चलने के लिए अवश्य कहेंगे!" कभी-कभी चतुर और सुंदर औरतें अपनी इच्छाएं ऐसे भी प्रकट करती हैं।

"आप उनका पता बता दें। हालांकि मैं छाएदाम से आया हूं, पर मुझे विश्वास है कि मैं उनका मकान खोज लूंगा।" अखबार के कार्यालय से निकलने के बाद उन्हें लगा कि उनका फैसला सही था, आखिर कुछ बातें तो बिलकुल ही भूल जाना चाहिए।

शहर वैसा ही था, केवल गलियों की भीड़ नयी थी। ई रू सुनसान छाएदाम में बीस वर्षों से अधिक रहे थे, जहां उन्हें मीलों चलने के बाद मुश्किल से कोई आदमी दिखाई पड़ता था। उनके लिए कुत्ते का भौंकना भी राहत की बात होती थी। अब जबकि वह भीड़ से गुजर रहे थे तो उन्होंने घुटन महसूस की; उन्हें ऐसा लगा कि वह किसी नमक की झील में गिर पड़े हैं, जहां डूबना या तैरना दोनों ही मुश्किल हैं।

हो दीदी के दरवाजा खोलने पर उन्हें राहत मिली। गर्म मिजाज बूढ़ी दीदी के बाल सफेद हो गए थे।

"क्या तुम्हें पी का तार नहीं मिला? उन्होंने सोचा कि तुम हवाई जहाज से जल्दी से आओगे।"

"मैंने हवाई जहाज का टिकट खरीदा था, पर उसे लौटा दिया। एक तिब्बती बूढ़े वाङत्वेइ दादा ने मुझसे एक बार कहा था, 'सुरागाय घोड़े के इतना तेज नहीं दौड़ सकती, पर वह धीरे-धीरे चलकर ल्हासा पहुंच सकती है! तुम खुद देखो कि कितने घुड़सवार इस कोशिश में घोड़े से गिरे?' मुझे उसकी बात सच लगती है..."

"मूर्ख! यह क्यों नहीं कहते कि हवाई जहाज से यात्रा करने में डर लगता है। तुम्हें पहले तो किसी चीज से डर नहीं लगता था।"

"खैर छोड़ो, पी कहां हैं?"

"उन्होंने कुछ दिनों तक तुम्हारी प्रतीक्षा की। तुम नहीं आए तो वह अकेले चले गए।"

"पर अभी वह कहां हैं?" उन्हें लगा कि कॉमरेड पी में अभी भी वही जोश-खरोश है।

"किसे मालूम? बूढ़े हो गए, पर अभी तक ताकत बाकी है।"

ई रू ने पुराने नेता की व्यस्तता समझी, "किसी जरूरी काम से ही गए होंगे?"

"मालूम नहीं। पर वह पहले की ही तरह दिन-रात काम कर रहे हैं। देखो, ऐसी जल्दबाजी में निकले कि पेट दर्द की दवा भी साथ ले जाना भूल गए।" फिर उसने पूछा, "क्या तुम अखबार के कार्यालय गए थे?"

ई रू ने हां में सिर हिलाया। उन्होंने कमरे में इधर-उधर देखा, पहले की ही तरह किताबों, पेंटिंग और सुन्दर चीनी रेखाक्षरों के अलावा कमरे में कुछ भी नहीं था। पी की यह पुरानी आदत थी।

"क्या तुम उससे नहीं मिले?" हो रू ने चिंता भरी नजरों से ई रू को देखा; ई रू उस परिवार के सदस्य की ही तरह थे। उनकी दोस्ती बहुत पहले भीषण लड़ाई के दिनों में कायम हुई थी।

वह उन पत्नियों में से थीं, जिन्हें अपने पति पर हुक्म चलाना अच्छा लगता है। खैर, कभी-कभी चांद बादलों के पीछे छिप जाता था या कभी उसे ग्रहण ही लग जाता था। फिर उन्होंने चंद्रग्रहण संबंधी क्वो चाची की कहानी याद की कि कैसे स्वर्ग का कुत्ता चांद को खा जाता है। शायद क्वो चाची की व्याख्या की याद ने ही उन्हें याङच्याओनाओ आने के लिए सोचने को प्रेरित किया।

लिङ सुङ धीमे कदमों से उनकी तरफ आ रही थी। वह पास आकर मुस्कराई। उसने कसा हुआ सफेद ऊनी स्वेटर पहन रखा था; उसके शरीर का आकर्षक उभार दिख रहा था। कॉलर के ऊपर उसकी सुराहीदार गर्दन उन्हें दिख रही थी। वह अभी भी सुंदर लगती थी, सुबह की ओस में नहाए किसी फूल की तरह। उसका चेहरा नजदीक आता जा रहा था। वह नहीं हिल सके। उसका ठंडा चेहरा उनसे सटा जा रहा था। उन्होंने अपना सिर हिलाया और उनकी आंखें खुल गईं। उन्हें पता ही नहीं चला कि वह कब सो गए थे और उनका चेहरा बस की खिड़की के शीशे से लगा हुआ था।

रोचक सपना था। पर एक सीमा तक सपने में वास्तविकता भी थी। उन्होंने स्वयं को समझाया, "शायद सपने की यही सच्चाई नहीं होती?"

पुरानी बस अचानक रुक गई। कुछ यात्री बस से उतरे और सड़क के किनारे बैठकर लंबा पाइप पीने लगे। दूर आकाश की तरफ देखते हुए मानो वे ड्राइवर से कह रहे हों, "आराम से ठीक करो, हमें कोई हड़बड़ी नहीं है। कभी-कभी खच्चर भी काम करने से मना कर देता है। बस को भी आराम की जरूरत है।" मजे लेने के लिए कुछ लोग ड्राइवर के इर्द-गिर्द खड़े हो गए। वह यह देख रहे थे कि ड्राइवर बस का इंजन कैसे ठीक करती है। वह बस के सामने आई, इंजन का बोनट उठाकर खराबी का कारण खोजने लगी। उसका सुंदर चेहरा ग्रीस और पसीने से भरा था। उसने ऊपर की तरफ देखा और बोली, "मां, एक बार और दबाओ।"

ई रू ने देखा, बस के अंदर उनके अलावा केवल ड्राइवर की मां बैठी थी। छोटे बालों और बेटी की तरह चौड़े कंधों वाली मां ड्राइवर की सीट पर बैठी हुई थी। उसने गलती से ब्रेक दबा दिया। ब्रेक दबते ही ड्राइवर तेंदुए की तरह उछली और मां पर गुर्रायी, "ब्रेक नहीं एक्सलेरेटर दबाओ...।" ई रू को चूंकि पहुंचने की जल्दी थी, इसलिए वह ड्राइवर की मदद

करने की सोचकर बस से उतरे। छाएदाम के बीस वर्षों के काम ने उन्हें खराब गाड़ी ठीक करने में अनुभवी बना दिया था।

ड्राइवर की मां ने अधीर होकर पूछा, "शिनशिन! क्या अभी तक इंजन चालू नहीं हुआ?"

लड़की ने ऊपर देखा, "अब बस भी करो, यात्रियों को तो कोई शिकायत नहीं है और तुम..."

ड्राइवर की सीट पर बैठी महिला नीचे उतरी और बोली, "वे इंतजार कर सकते हैं, पर मैं नहीं। बेहतर होगा कि मैं चलूं, मैं पहाड़ी से होकर निकल जाऊंगी।" ऐसा लगा कि गाड़ी के ठीक होने तक इंतजार करना उसके धैर्य के बाहर है। अचानक ई रू चौंक उठे! उसकी आवाज क्यों इतनी परिचित लग रही थी?

"मां..." लड़की बुदबुदाई।

"शिनशिन! कोई बात नहीं! मैं चलती हूं।" इतना कहकर वह तेज कदमों से पहाड़ी की तरफ बढ़ गई।

ई रू ने दिल ही दिल में तमन्ना की कि वह महिला एक बार पलटे तो वह देख लें। पर शायद उसने पलट कर न देखने का सोच रखा था। जब तक वह बस के आगे आए, महिला थोड़ी दूर निकल गई थी। उन्होंने उसे पीछे से देखा, उसकी आकृति परिचित लग रही थी।

आखिरकार पुरानी लॉरी का इंजन फिर से स्टार्ट हुआ। शिनशिन खड़ी हुई, उसके चेहरे पर विजयोल्लास था, उसने गर्व के साथ हाथ हिलाकर मां को इशारा किया। फिर उसने यात्रियों से माफी मांगी और उनसे बस में बैठने को कहा। पहाड़ी लोगों की सहनशीलता और धैर्य ने ई रू को चकित कर दिया। शिकायत करने के बदले उन्होंने शिनशिन को सांत्वना दी, "हमें तुम्हारी मां की तरह जल्दी नहीं है। हम अभी भी इंतजार कर सकते हैं... अब तो गाड़ी ठीक हो गई है न?" पर ई रू को मालूम था कि इंजन फिर से बंद हो जाएगा। उन्होंने लोगों को आगाह किया, "मुझे डर है कि गाड़ी फिर से बंद न हो जाए।"

शिनशिन ने उनकी तरफ क्रोध भरी नजरों से देखा और पूछा, "आपको कैसे मालूम? बस में बैठिए, वर्ना हम आपको छोड़कर चले जाएंगे।" अपनी सीट पर बैठती हुई वह गुर्रायी।

उन्होंने हंसते हुए कहा, "चलो, देखते हैं!"

लॉरी थोड़ी देर के बाद फिर रुक गई। शिनशिन बस से उतरी और उनकी तरफ मुस्कराती हुई आई, "क्या आपको बस कंपनी ने यह देखने के लिए भेजा है कि 'किसान-मजदूर-व्यापारी साझेदार उद्यम' कैसे काम कर रहा है?"

उन्हें फिर से एड्रियन सागर तट से आया शब्द सुनाई पड़ा! ई रू को हंसी आ गई। बाद में उन्हें बताया गया कि ट्रैक्टर स्टेशन ने छोटी दूरी की यह यातायात सेवा आरंभ की है, ताकि देहात के लोगों को सामान कंधे पर ढोकर ले जाने की परेशानी से मुक्ति मिले। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरन ई रू ने अनाज और खाद्य सामग्री ढोने का काम किया था। एक-एक सीढ़ी करके पहाड़ पर चढ़ने की परेशानी का उन्हें अनुभव था। जवान लड़की की स्पष्टवादिता और मुस्कराहट ने उन्हें आकर्षित किया। इसलिए उसके आग्रह पर वह इंजन देखने आए। कार ठीक करने के बीस वर्षों के अनुभव से उन्हें मालूम था कि उन्हें

क्या करना चाहिए। उन्हें भी कोई जल्दबाजी न थी। उन्होंने दोनों शकरकंद निकाले और एक शिनशिन की तरफ बढ़ाया, "लो, खा लो। तुम्हें शायद भूख लगी हो?"

उसने शकरकंद लेने में झिझक नहीं दिखाई और गड़प से मुंह में रख लिया। निगलने के पहले वह खुश होकर बोली, "शहद से अधिक मीठा! यह तो हमारे याङच्याओनाओ का शकरकंद है!"

ई रू ने उसकी तरफ देखते हुए आश्चर्य के साथ पूछा, "क्या तुम उस छोटे पहाड़ी गांव की रहने वाली हो?"

मुंह में शकरकंद होने के कारण वह बोल न सकी। उसने हां में सिर हिलाया।

"तुम्हारी मां भी याङच्याओनाओ की हैं?"

वह हंस पड़ी। उसे यह सवाल एकदम बेतुका लगा। वह बोली, "शहद से अधिक मीठे शकरकंद की खेती मेरी मां ने ही आरंभ की है। यह एकदम नयी चीज है। क्या आपको मालूम है कि इस मीठे शकरकंद का क्या नाम है? इसे सभी मेरी मां के नाम 'न्यून्यू' से जानते हैं!"

यह नाम सुनते ही ई रू की जीभ तालू से सट गई। उन्होंने दूर पहाड़ी की तरफ देखा, न्यून्यू एक-एक सीढ़ी कठिनाई से चढ़ती दूर निकल गई थी। केवल एक छोटी छाया दिखाई दे रही थी। ई रू अचानक मुड़े और उन्होंने शिनशिन को गौर से देखा। उन्होंने सोचा, "अब उसकी एक इतनी बड़ी बेटी है! शायद इसी कारण उसने मेरी तरफ नहीं देखा और इतनी. हड़बड़ी में चली गई...।"

उन्होंने शकरकंद खाया। पर शकरकंद की मिठास उनके पश्चाताप की कड़वाहट को दूर न कर सकी; उन्हें नहीं आना चाहिए था। उसकी मानसिक शांति वह क्यों भंग करें?

३

बाहर सुन्दर चांदनी रात में पेड़ झूम रहे थे। ई रू को कम्यून की अतिथिशाला में नींद नहीं आ रही थी। क्या यह न्यून्यू को देखने और उसकी बेटी से मिलने के कारण दिल में भर आई उदासी के कारण था? क्या यह क्वो चाची के निधन का दुखद समाचार सुनने से उनके दुखी होने के कारण था? या सिर्फ बगल के कमरे से आ रही खर्राटों की आवाज के कारण था, जिसने कॉमरेड पी चिङ की याद दिला दी थी?

पहले ऐसी चांदनी रात में वह कपड़े पहनकर बाहर निकलते थे और पी चिङ के साथ मुख्य चोटी पर जाते थे और वहां से याङच्याओनाओ लौटते थे। वह कमल की पंखुड़ियों सदृश तालाब के पास रुककर दो-चार घूंट साफ मीठा पानी पीते थे। फिर वहां से वे दौड़ते हुए सीधे याङच्याओनाओ जाते थे। रास्ते में वह कोट के बटन खोल देते थे और ठंडी बयार का मजा लेते थे। पी चिङ उन्हें निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के उपन्यास *अग्निदीक्षा* के पावेल और तान्या का प्रेमप्रसंग या चीनी किसानों के प्रतिनिधि आ क्यू की कहानी सुनाते थे। ...बातचीत करते हुए थोड़ी देर में वे घर पहुंच जाते थे। वहां क्वो चाची और न्यून्यू उनकी प्रतीक्षा में

बैठी रहती थीं। वे छककर मीठी खुशबूदार शराब पीते और ऊंघने लगते थे। चंद मिनटों के अंदर पी खाङ पर लेट जाते और उनके खर्राटे सुनने को मिलते थे।

बगल के कमरे में सोया आदमी भी खर्राटे ले रहा था, पर वे पी के इतने तेज नहीं थे। ई रू जब पहली बार याङच्याओनाओ आए थे, तब उनकी उम्र बाल लीग के नेता से बहुत अधिक नहीं थी। उनकी न्यून्यू तब एक छोटी लड़की थी, उसकी चोटी लहराती रहती थी। वह हमेशा कहती थी, "निदेशक पी, सोने पर आपकी नाक खूब बजती है!"

पी चिङ हंसे देते थे, "क्वो चाची, इसके लिए मुझे माफ करना। जब मैं येनआन में था तो कई विदेशी डाक्टरों से मिला, पर वे भी इसका इलाज न कर सके। बस जापानियों के हारने का इंतजार करो।"

"क्यों? तब आप खर्राटें लेना छोड़ देंगे क्या?" न्यून्यू पूछती।

वह उसकी नाक पकड़कर कहते, "नहीं, तब मैं याङच्याओनाओ से चला जाऊंगा और उसके बाद बेर की शराब पीने का मौका नहीं मिलेगा।"

"और मैं तुम्हारा खर्राटा नहीं सुन पाऊंगी..." ई रू क्वो चाची के इस कथन का आशय नहीं समझ पाए। बहुत बाद में वह इसमें छिपा अर्थ समझ पाए।

"पर यह सब अतीत था..." ई रू को याद आया कि १९५७ में एक बार पार्टी की मीटिंग में उन्होंने खर्राटों के बारे में कहा था, "क्वो चाची अब निदेशक पी का खर्राटा नहीं सुन पाएंगी। इतने वर्षों तक उनके सेक्रेटरी के तौर पर काम करने के बावजूद मुझे भी यह मौका कम ही मिल पाएगा। वह इन दिनों अत्यधिक व्यस्त हैं, सभा बुलाने या राजनीतिक कक्षाओं के संगठन से उन्हें फुर्सत नहीं है। शेष समय में उन्हें कॉमरेड हो रू का सौंपा काम भी करना पड़ेगा। पिछली बार जब क्वो चाची उनसे मिलने आई थीं, कॉमरेड पी को पांच मिनट बैठकर बात करने की भी फुर्सत न थी। उन्होंने मुझसे क्वो चाची की आवभगत के लिए कहा, जबकि क्वो चाची उनके लिए चार बोतल बेर की शराब और कुछ सूखे परसीमन और अखरोट ले आई थीं।"

पी चिङ के साथ लंबे समय से काम कर उन्होंने उनसे सीखा था कि अधिक नहीं बोलना चाहिए। उदाहरण के लिए, उन्होंने यह नहीं बताया कि कैसे झेंपते हुए उन्होंने पांच-पांच य्वान के नोट उनके हाथ में देते हुए कहा था, "ये नोट क्वो चाची को दे देना और उन्हें अपने साथ ठहरने के लिए कहना। आठ-दस दिन की छुट्टी लेकर तुम भी उनके साथ रहो। मैं संपादन विभाग से अनुमति दिलवा दूंगा। उनकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करना। दुख की बात है कि हो रू उन्हें अपने साथ नहीं ठहरने देगी। शराब भी रख लो, मेरी पत्नी को पनामा प्रदर्शनी में पुरस्कृत शराब के अलावा और कोई शराब अच्छी नहीं लगती।"

ई रू अनुमान लगा सकते थे कि उन पर हो रू का कितना अधिक दबाव था। उन्होंने नोट लेने से इंकार कर दिया था, "आप क्या समझते हैं कि मेरे पास पैसे नहीं हैं?"

पी चिङ ने आह भरी, "ये नोट मेरे पश्चाताप को कम नहीं कर सकते!" उन्होंने गुस्से में कहा, "हम जापानियों से लड़ सकते हैं, दुश्मनों को हरा सकते हैं, पर पेटी-बुर्जुआ विद्रूपताओं के सामने बेबस हो जाते हैं।"

ई रू ने सहानुभूति भरी नजरों से पी चिङ को देखा। वह भी तो भावनात्मक संकट से गुजर रहे थे। पति की मृत्यु के बाद लिङ सुङ उनके पीछे पड़ गई थी और न्यून्यू तथा स्वयं में से एक के चुनाव के लिए बाध्य करने की कोशिश कर रही थी।

क्वो चाची सारी बातें समझकर पी चिङ को माफ कर सकती थीं, क्योंकि मुक्ति के बाद तीसरी बार वह शहर में उनसे मिलने आई थीं। वह ई रू के साथ संपादन कार्यालय के पीछे स्थित अविवाहित युवकों के आवास में आईं। सीढ़ियां चढ़ते समय उन्होंने कहा, "मुझे मालूम है, पी चिङ अब बहुत महत्वपूर्ण कार्यकर्ता हो गया है। पहाड़ी घाटी से आने वाली मुझ जैसी बुढ़िया इस योग्य नहीं है कि उसके भव्य मकान में रह सके।" ई रू ने क्वो चाची की बात समझी। यदि पी चिङ की सुंदर बीवी उस मकान में नहीं होती तो क्वो चाची उनके साथ जिंदगीभर रह सकती थीं। ई रू को याद आया कि मुक्ति के बाद पहली बार यहां आने पर कैसे क्वो चाची ने हो रू को नाराज कर दिया था। उन्होंने उनकी नौकरानी को हो रू की मां समझ लिया था और उससे कहा था कि तुम्हारी बेटी बहुत सुंदर है। फिर हो रू की तरफ संकेत कर कहा था कि तुम्हारी बेटी इतनी भाग्यशाली है कि उसे पी जैसा अच्छा पति मिला है। हालांकि वह खर्राटे लेता है, पर उसकी आदत हो जाए तो साथ रहने वाले को परेशानी नहीं होती। यह भयंकर गलती थी, पर हो रू ने इसका बुरा नहीं माना। उसने मुस्कराकर इसे टाल दिया। पर उसे क्वो चाची की दूसरी टिप्पणी से दुख हुआ। जब क्वो चाची को मालूम हुआ कि बूढ़ी औरत इस घर की नौकरानी है तो वह स्वयं को न रोक सकीं। उन्होंने हो रू से कहा, "तुम जवान और स्वस्थ हो। तुम्हें नौकरानी नहीं रखनी चाहिए थी।" फिर उन्होंने पी की तरफ मुड़कर शिकायत के लहजे में कहा, "आठवीं राह सेना के आदमी से ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती, च्च?"

१९५४ में दूसरी बार वह पी चिङ से मिलने आईं। उस साल पूरे देश में भरपूर फसल हुई थी। क्वो चाची भी अपने साथ कोदों, बेर, आलू, शकरकंद के सूखे टुकड़े, बेर की शराब, उबले अंडे, भुने पैनकेक और याङच्याओनाओ की अन्य मशहूर चीजें ले आई थीं। वह अत्यंत खुश थीं; हो रू को बेटा हुआ था, इसकी खुशी हो रू से भी अधिक उन्हें थी। शायद क्रांतिकारी युद्ध में अपने पति और बेटों के मारे जाने के कारण छोटे बच्चों को वह बहुत पसंद करती थीं। उन्होंने अतीत में जैसे ई रू को प्यार और स्नेह दिया था, वैसे ही हो रू के बेटे को सीने से लगाकर दुलारने लगीं। ई रू ने देखा कि हो रू का चेहरा अचानक पीला पड़ गया। उसे डर था कि बेटे को कहीं क्वो चाची से कोई बीमारी न लग जाए।

दूसरी बार न्यून्यू भी क्वो चाची के साथ आई थी। वही सारा सामान ढोकर लाई थी। छोटे बालों और चौड़े कंधों वाली न्यून्यू कमरे में घुसने के साथ शर्म से लाल हो गई थी।

उस बार क्वो चाची थोड़े समय के लिए रुकीं। न्यून्यू ने कुछ बीज डाले थे और वह उनके लिए बेहद चिंतित थी। क्वो चाची और न्यून्यू के याङच्याओनाओ लौटने के बाद हो रू ने पति से जमकर झगड़ा किया। संयोग से उस समय ई रू किसी पांडुलिपि की तलाश में उनके घर आए थे और उन्हें हो रू का रौद्र रूप देखने को मिला था। दुश्मनों को आतंकित करने वाला छापामार नेता, आकर्षक वक्ता और एक प्रसिद्ध अखबार का प्रमुख संपादक अपनी

पत्नी की फटकार के सामने आहें भरने के अलावा कुछ नहीं कर सका। ई रू भी उस फटकार में शामिल हो गए, "मैंने सुना है कि तुम उस जड़ दिमाग लड़की से शादी करने जा रहे हो।"

"हो दीदी! तुम उसे जड़ दिमाग कहती हो?"

"तुम उभरते हुए संवाददाता हो। क्या उससे तुम्हारी जोड़ी बनती है?"

पी चिङ ने उसे रोकना चाहा, पर उसने कहा, "तुम बीच में न पड़ो। मैं अपनी राय दे रही हूं।"

ई रू ने मुस्कराते हुए पूछा, "हो दीदी, तुम ऐसा क्यों सोचती हो कि यह जोड़ी अच्छी नहीं है? क्या तुम अपने आंगन में खिले नीले फूल का नाम बता सकती हो?"

वह तो दूर रही, निदेशक पी चिङ भी फूल का नाम नहीं बता सके।

ई रू ने गर्व के साथ कहा, "पर वह बता सकती है!"

हो रू ने गुस्से में कहा, "ठीक है, तुम शादी करना चाहते हो, करो। आखिर यह तुम्हारा निजी मामला है..."

इस घटना के एक दिन पहले ई रू न्यून्यू के साथ शहर घूमने गए थे। वे नए-नए खुले वनस्पति उद्यान को देखने गए। राह चलते उसने यों ही कहा, "मैंने अपनी जिंदगी में पहली बार इतने सुंदर नीले फूल देखे!"

"कहां हैं नीले फूल?" ई रू ने अपने आसपास देखा।

वह मुस्कराई, "यहां नहीं, वह फूल तो निदेशक पी चिङ के आंगन में है। क्या तुम्हें उस फूल का नाम मालूम है? अरे, तुम्हारे जैसा एक प्रसिद्ध संवाददाता भी उस फूल का नाम नहीं बता सकता? मैंने फूलों की किताब में उसका नाम देखा है। बड़ा सुंदर नाम है।"

ई रू ने नाम सुनना चाहा।

"स्मृतिगंधा!" उसने धीरे से कहा।

"न्यून्यू! तुम्हें डर है कि मैं तुम्हें भूल जाऊंगा!"

लाल सेम के पेड़ के नीचे वह गहरी भावनाओं के साथ मुस्कराई, ठीक वैसे ही जैसे वर्षों पहले 'कमल तालाब' की मुख्य चोटी के साफ झरने के पास मुस्कराई थी। "तुम एक प्रसिद्ध पत्रकार हो। मैं तुम्हारा नाम हमेशा अखबार में देखती हूं।"

"न्यन्यू, तुम्हारे नाम का मेरे जीवन में अत्यधिक महत्व है।"

१९५७ में क्वो चाची अकेली आईं। लंबी बीमारी से उठी थीं, लगभग मौत के मुंह से बचकर आई थीं। शायद उन्होंने महसूस किया हो कि अब और अधिक दिन जीवित नहीं रहेंगी। उन्होंने अपने बचाए पैसे से एक ताबूत खरीदा। दोनों अनाथों की शादी भी वह अपने मरने से पहले निश्चित कर जाना चाहती थीं। ई रू के माता-पिता लाल सेना में थे और क्रांतिकारी युद्ध में शहीद हो गए थे। न्यून्यू के माता-पिता कोयला खदान में काम करते थे और खान के अंदर जहरीली गैस के शिकार हो गए थे। उस दुखद दिन क्वो चाची को खान के बाहर न्यून्यू अकेली मिली थी। वह उसे घर ले आई थीं और अपनी बेटी की तरह पाला था।

अपनी तीसरी यात्रा में ई रू के साथ रहकर क्वो चाची बहुत खुश थीं। वह अविवाहितों के आवास के हर कमरे में गईं, वहां से उन्होंने संपादकों, कलाकारों, फोटोग्राफरों, प्रूफरीडरों तथा दूसरों के गंदे चादर, तौलिए, कमीजें और पैंट इकट्ठे किये। उन्होंने उन कपड़ों को साफ

किया, ठीक वैसे ही जैसे अतीत में याङच्याओनाओ के जवानों के कपड़े साफ करती थीं।

उनका काम करते समय क्वो चाची को पुराने समय की याद हो आई, उन्होंने उम्मीद की कि वे भी पहले की तरह गाने गाएंगे। पहले लाल सेना के जवान जहां भी जाते थे, अपने क्रांतिकारी गीत सुनाते थे और लोगों के दिलों में क्रांति की आग सुलगा देते थे। उन्होंने ई रू से कहा, "वह गीत सुनाओ 'हवा गरज रही है'! मैंने कई वर्षों से यह गीत नहीं सुना है।" वे सभी मिलकर उत्साह से गाने लगे। उन्होंने देखा कि बूढ़ी क्रांतिकारी मां मुस्करा रही है और उसकी आंखों से निकले गर्म आंसू गालों को गीला कर रहे हैं। किसी ने भी नहीं देखा कि पी चिङ दरवाजे के पास खड़े होकर गीत सुन रहे हैं और अपनी आंखों से आंसू पोंछ रहे हैं।

जब उन्होंने पी चिङ को देखा तो ई रू को छोड़ शेष सभी ई रू के कमरे से निकल गए। जब वे तीनों रह गए तो उन्होंने ई रू से ठंडी सांस भरते हुए कहा, "पिछली बार तुमने जो कहा था, वह बिलकुल सच है। हमें अपने अंदर कारण की तलाश करनी चाहिए, बाहर नहीं। क्या हम उसे नहीं खो चुके हैं, जो हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है?"

"आप क्या कहना चाहते हैं, निदेशक पी?"

"क्या तुम्हारे पास थोड़ी शराब नहीं है?"

"मेरे पास पनामा प्रदर्शनी में पुरस्कृत मार्के की शराब नहीं है!"

याङच्याओनाओ में जैसे वे क्वो चाची के घर भाप से पकाया बाजरा खाते थे, वैसे ही उन्होंने खजूर की शराब पी और मुर्गे खाए। क्वो चाची उन्हें प्यार से देखती रहीं। उन दोनों ने तमाम विषयों पर बातें कीं, जिनमें से कुछ क्वो चाची नहीं समझ सकीं।

"चाची! तुम मुझसे नाराज हो?" पी ने पूछा। "मैं बड़ा व महत्वपूर्ण आदमी हो गया हूं। पर मैं जानता हूं कि मैं आम लोगों से कट गया हूं और यह मुझे पसंद नहीं है।"

क्वो चाची ने उनके कहने का मतलब समझा और कहा, "कोई बात नहीं। परिवार में झगड़े होते ही हैं! उसके बाद सब कुछ ठीक हो जाता है।"

पार्टी शाखा की मीटिंग में ई रू ने भाषण दिया, "...ईमानदारी से बताएं, शहर आने के बाद हमने अपनी देहाती जनता का कितना ख्याल रखा है? हम आम लोगों से कट गए हैं, हम उन लोगों से कट गए हैं, जिन्होंने क्रांतिकारी युद्ध में हमारी मदद की। हमें बाजरा खिलाया, एक-पहिया-ठेले या स्ट्रेचर पर बिठाकर हमें इधर-उधर ले गए। बीमार पड़ने पर हमारी सेवा की। उनकी मदद से ही पार्टी ने दुश्मनों को हराया और विजय हासिल की। इसीलिए हमारी पार्टी ने बार-बार आगाह किया कि हमें आम लोगों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। अगर हम अपनी उस परंपरा को खो देंगे तो हम कहीं के न रहेंगे।" उन्होंने अपने सामने बैठी लिङ सुङ को देखा। वह हाल ही में पार्टी में शामिल हुई थी, उसने पहले की तरह भड़कीले कपड़े नहीं पहन रखे थे। मीटिंग के बाद उसने ई रू को एक पर्ची दी, "यदि आप बुरा न मानें तो मैं क्वो चाची से मिलने आऊंगी।"

जब वह मीटिंग रूम से निकलकर सीढ़ियां उतर रही थी, उसने पलटकर आंखों के इशारे से पूछा, "मेरा स्वागत है न?" ई रू ने सहमति में हाथ से इशारा किया।

लिङ सुङ के पति जब अस्पताल में बीमार पड़े थे, वह उनके इतने करीब हो गई थी कि

उन्हें परेशानी होने लगी थी। पति की मृत्यु के बाद तो उसकी आंखें हमेशा उन्हीं पर लगी रहती थीं। वह चाहे जितना भी बचने की कोशिश करते, पर उसकी आंखें उन्हीं पर स्थिर रहती थीं।

जब वह ई रू के कमरे में आई, उसने क्वो चाची के साथ इतना सुंदर व्यवहार किया कि क्वो चाची भी पसीज गईं। ई रू की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर बात क्या है? अचानक उसने अपनी जेब से किसी कार्यक्रम का टिकट निकाला और कहा, "ओह, मैं तो भूल ही गई थी, यह टिकट मैंने आपके लिए खरीदा है, चाची। यह ऑपेरा का टिकट है। क्या आप जाना चाहेंगी?"

उसने एक रिक्शा बुलाया और चाची को छोड़ने गई।

लौटकर उसने अपना जैकेट उतारा। ई रू के सामने एक सुंदर जवान औरत खड़ी थी; सफेद ऊन का स्वेटर, गोल कंधे, छाती के उभार और पतली कमर से चिपका था। उसकी चमकती बड़ी आंखें ई रू पर स्थिर थीं, "ई रू, आपने दोपहर में 'स्मृतिगंधा' के बारे में बताया था। क्या मैं उस फूल की तरह लगती हूं?"

ई रू खामोश रहे।

"तो आपकी 'स्मृतिगंधा' न्यून्यू है, यह क्वो चाची ने थोड़ी देर पहले मुझे बताया। पर आप स्वयं देखें, कौन अधिक सुंदर है? मैं या वह? कौन अच्छी है?"

ई रू को ऐसी तुलना की आदत नहीं थी। उन्होंने कहा, "लिङ सुङ, संभव है तुम न्यून्यू से हजार गुना या दस हजार गुना सुंदर हो। पर प्यार एक दूसरी चीज है। मैं तुम्हारा आदर करता हूं। मैं तुम्हारा एहसानमंद हूं! हम अच्छे दोस्त बने रहें!"

"ई रू, मैं आपसे प्यार करती हूं। यदि मेरे पति जीवित भी होते तो भी मैं उनसे तलाक लेकर आपसे शादी करती। मैं आपसे प्यार करती हूं। प्यार निर्दयी होता है! मैं जानती हूं, संभव है, मैं आपकी न्यून्यू जैसी नहीं, पर मुझे लगता है कि आप मेरे हैं। मैं आपके कमरे में आई हूं, मैं सबको यह बताने आई हूं कि मैं आपकी हूं। हम लोग कल शादी कर लें। एक औरत को अपने प्यार, अपनी खुशी और अपना पुरुष हासिल करने का अधिकार है"—कहती हुई वह धीरे-धीरे ई रू के करीब आई, उसने ई रू को बाहों में कस लिया और अपने तपते होंठों से ई रू को चूमने लगी।

४

ई रू ने लॉरी का इंजन ठीक कर दिया। शिनशिन खुशी से उछलकर ड्राइवर की सीट पर बैठी। 'कमल तालाब' पहुंचने पर उसने उनसे अपने घर याङच्याओनाओ चलने का आग्रह किया। उनकी भी इच्छा जाने की हुई, पर उहोंने रात में 'कमल तालाब' में रुकने का फैसला किया। पचास वर्षीय प्रौढ़ 'सावधानी' शब्द का अर्थ समझता है।

दूसरे दिन अतिथिशाला से वह याङच्याओनाओ के लिए रवाना हुए। मुख्य चोटी पर चढ़ते

समय सुबह की ताजा हवा अनुप्राणित कर रही थी। पूरे बाईस वर्षों के बाद वह मुख्य चोटी पर जा रहे थे।

पिछली बार याङच्याओनाओ छोड़ते समय न्यून्यू को और उन्हें विश्वास था कि वे दस-पंद्रह दिनों में फिर मिलेंगे। दो कदम चलने के बाद उन्होंने मुड़कर न्यून्यू से कहा था, "न्यून्यू, मैं अधिक से अधिक दो सप्ताह में अपना काम समाप्त कर लौट आऊंगा।"

पर वह नहीं लौट पाए, पूरे बाईस वर्ष नहीं मिल पाए! उन्होंने वह शाम याद की, जब उन्होंने स्वयं को लिङ सुङ के प्रेमजाल से मुक्त किया था। क्वो चाची जब ऑपेरा से लौटकर आई तो उसने ई रू को कहीं जाने के लिए तैयार होते देखा।

"क्या बात है? कहीं जा रहे हो क्या?"

"हां, याङच्याओनाओ!"

"किसलिए?"

"मैं न्यून्यू से शादी करना चाहता हूं।"

क्वो चाची ने खुश होकर कहा, "मैंने पहले ही कहा था। ई रू न्यून्यू को नहीं भुला सकता! न्यून्यू ने दो बार ई रू की जान बचाई है!"

हां, उसने उन्हें दो बार बचाया था, एक बार जब जमींदारों की सेना ने आक्रमण कर दिया था, तब वह तेंदुए की तरह उनसे लड़ी थी और दूसरी बार जब लुङथानखओ अभियान में वह लाशों के बीच अधमरे पड़े थे, तब न्यून्यू ने लाशों के बीच से ढूंढ़कर उन्हें निकाला था।

इन बातों की याद आते ही ई रू ने क्वो चाची को थोड़ी देर पहले का सारा किस्सा सुनाया। कमरे से निकलते समय लिङ सुङ ने बिफरते हुए कहा था, "कल सुबह सभी जान जाएंगे कि मैंने आपके साथ रात गुजारी थी!" इसीलिए क्वो चाची और ई रू रात में ही निकलना चाहते थे। उन्होंने अपना सामान पीठ पर लादा और निदेशक पी से मिलने आए। हो रू सोफे पर लेटी थी। वह ई रू को देखकर खुश हुई, पर क्वो चाची पर नजर पड़ते ही उसकी मुस्कराहट गायब हो गई। उसने उठकर क्वो चाची को बिठाया। जब ई रू ने अपने आने का उद्देश्य बताया तो वह बोली, "क्या निदेशक की प्रतीक्षा करना जरूरी है? भला उनकी अंतहीन मीटिंगों का सिलसिला समाप्त होगा?" क्वो चाची ने कहा, "हमें मिलकर जाना चाहिए।" वह उनसे मिलना चाहती थी।

हो रू ने दराज से पांच-पांच के दो नोट निकाले और क्वो चाची को दिये, "इन्हें रख लें। शायद रास्ते में जरूरत पड़ेगी। या फिर कुछ कपड़े खरीद लेंगी और अपने लिए जैकेट बनवा लेंगी।"

ई रू के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने देखा कि क्वो चाची के हाथ कांप रहे हैं। पहाड़ी घाटी से आने वालों का ऐसा अपमान! युद्ध के दिनों में अपनी जान पर खेल कर उन्होंने निदेशक पी का पता दुश्मनों को नहीं बताया था। दुश्मनों ने उनको कितना मारा था। जान बचाने की कीमत आज मिल रही है—पांच-पांच के दो नोट?

घर लौटते समय क्वो चाची नहीं मुस्कराईं। याङच्याओनाओ पहुंचने पर जब न्यून्यू को उन्होंने देखा, तभी उनकी मुस्कराहट लौट पाई।

"न्यून्यू, देखो, मैं तुम्हारे लिए क्या पकड़कर लाई हूं?"

न्यून्यू को आश्चर्य नहीं हुआ था। क्या वह उस 'स्मृतिगंधा' को भूल सकते थे।

"ओह, मेरा शिकार कहां है?" क्वो चाची ने मुड़कर देखा।

वह न्यून्यू से शादी करने जा रहे हैं, यह सोचकर उन्हें हल्की झेंप हुई। इसीलिए अपना सामान रखने के बाद वह बाल्टी लेकर पानी लेने चले गए थे। युद्ध के दिनों में लाल सेना के जवान जब गांव में आते थे तो यही करते थे। शाम को खाङ पर एक साथ बैठकर तीनों ने भाप से पकाया बाजरा खाया। ई रू के कटोरे का बाजरा खत्म हुआ तो न्यून्यू ने फिर से डाल दिया, कटोरे में बाजरा डालते समय उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया। पहाड़ी गांव की प्रथा के अनुसार पत्नी पति को खाना परोसती है। उस दिन खाते समय आदतन ई रू अपना खाना लेने के लिए उठे, पर क्वो चाची ने रोक दिया, "न्यून्यू को लाने दो। तुम दोनों बहुत पहले पति-पत्नी हो गए होते!"

मनुष्य अपनी जिंदगी के कुछ सुंदर लमहे कभी नहीं भूल सकता। एक या दो दिनों की अमूल्य खुशी सुरक्षित रहती है, स्मृति में तो हमेशा बनी रहती है...

तीसरे दिन शाम को ई रू और न्यून्यू साथ बैठे बातें कर रहे थे कि संपादन विभाग का तार मिला। ई रू ने महसूस किया कि उन्हें न्यून्यू को छोड़कर जाना होगा। चलते समय वे तालाब के पास खड़े कुछ देर तक एक-दूसरे को देखते रहे। ई रू केवल इतना कह सके, "न्यून्यू, यही नियति है!"

"कोई बात नहीं! आप जल्दी ही लौट आएंगे।" उसने ई रू को सांत्वना दी।

"हां, मैं लौट आऊंगा, न्यून्यू!"

"मैंने तुम्हें तन-मन से प्यार किया है। मैं सदा के लिए तुम्हारी हूं।" उसने कहा। उसकी आंखें विश्वास से चमक रही थीं और पत्नी की ईमानदारी व शालीनता को व्यक्त कर रही थीं।

यह सच्चा प्यार था, ई रू की जिंदगी का एकमात्र प्यार।

ई रू संपादक कार्यालय पहुंचे। उनकी कार्यक्षमता से सभी परिचित थे। कुछ ही दिनों के बाद उन पर दक्षिणपंथी होने का अभियोग लगा।

पर यह पहले की बात थी। यहां लौटने पर उन्हें मालूम हुआ कि १९५८ में लिङ सुङ ने स्वयं से बीस वर्ष अधिक के एक बूढ़े से शादी कर ली। बूढ़े के पास बहुत पैसे थे, पर उसे प्यार और खुशी मिली कि नहीं, यह किसी को नहीं मालूम। 'सांस्कृतिक क्रांति' के आरंभ में बूढ़े व्यक्ति की तीव्र आलोचना की गई। उसे दिल का दौरा पड़ा और वह कैद में गिर कर बेहोश हो गया। अब वह ठीक-ठाक था और सरकार ने उसे दस हजार यूवान दिए थे... हो रू और भी कुछ बताना चाहती थीं, पर ई रू ने बीच में कहा, "मैं भूली बातों को फिर से याद करना नहीं चाहता।"

ई रू जब चोटी पर पहुंचे, उन्होंने एक आदमी को याङच्याओनाओ की तरफ जाते देखा। पीछे से वह आदमी ई रू को परिचित सा जान पड़ा।

५

ई रू को लगा कि पी चिङ जा रहे हैं। असंभव! उन्होंने आंखों के ऊपर हथेली से छाया बनाकर गौर से देखा; पर उस आदमी की छाया कब्रिस्तान के मकबरों से निकली और गांव में खो गई।

ई रू निश्चित थे कि वह पी चिङ ही होंगे। उन्हें याद आया, 'सांस्कृतिक क्रांति' के दौरान पी चिङ पर भी दक्षिणपंथी होने का आरोप लगा था, उन्हें परिश्रम से सुधार के लिए छील्येन पहाड़ के दक्षिण में स्थित घास मैदान के युद्ध के लिए सुरक्षित अनाज गोदाम में भेजा गया था। वहां जब भी डाकुओं का दल आता, मजदूर नेता फोन कर सेना को मदद के लिए बुलाते थे। पी चिङ ने दूसरा उपाय किया। उन्होंने हाथ हिलाकर कहा, "जो पक्के कम्युनिस्ट हैं, आगे आएं। यह अनाज जनता का है, हमारी सरकार का है, हम इसे विद्रोही डाकुओं के हाथ में नहीं जाने देंगे। हम कम्युनिस्टों को अपना साहस दिखाना चाहिए; जिनके पास बंदूक और बम हैं, वे आगे जाएं; जिनके पास हथियार नहीं हैं, वे कुछ भी उठा लें। कॉमरेड, मेरे साथ आएं!"

उस बुरी परिस्थिति में भी निदेशक पी सक्रिय रहे। हाथ में लाठी लिए वह आगे-आगे चले और डाकुओं से लड़ने के लिए बढ़े। ई रू भी उनके साथ थे, वह अपने पुराने नेता से मिलने आए थे।

पी चिङ गरजे, "आक्रमण करो!"

आक्रामक टुकड़ी को देख डाकू भाग खड़े हुए। जब वे लौटकर गोदाम पर आए तो नेता अभी फोन पर बात ही कर रहे थे, "कुछ सशस्त्र टुकड़ियों को यहां जल्दी भेजें...।"

पी चिङ ऐसी दृढ़ इच्छाशक्ति के व्यक्ति थे।

१९५८ में परिश्रम से सुधार के लिए अखबार का दफ्तर छोड़कर ई रू छाएदाम बेसिन गए। छाएदाम बेसिन आने के बाद बाहरी दुनिया से उनका संपर्क नहीं रह गया। उन्होंने केवल एक बार न्यून्यू को पत्र लिखा और अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने यह भी लिखा कि वह अपने भविष्य के लिए उन्हें मरा ही समझे और उनका इंतजार न करे। वह पत्र विदाई भाषण के समान था।

१९५९ के अंत में पी चिङ को सुधारने के लिए भेजा गया। उन्हें मालूम था कि ई रू छाएदाम में हैं, पर उन्हें उनका पता नहीं मालूम था। इसलिए उन्होंने लगभग सौ पर्चियां लिखीं और अनाज लेकर छाएदाम जाने वाली गाड़ियों के पीछे चिपकाया। पर्ची पर उनके पते के साथ लिखा था, "ई रू, जितनी जल्दी संभव हो, मुझसे मिलने आओ। मैं इन दिनों छील्येन पहाड़ के दक्षिण में स्थित घास के मैदान के युद्ध के लिए सुरक्षित अनाज गोदाम में हूं।"

छै महीने के बाद एक गाड़ी का इंजन ठीक करते समय उन्हें एक पर्ची दिखी, वह तुरंत उनसे मिलने गए। जब वे फिर से मिले तो पी चिङ ने कहा, "आओ, हम तीन बार गले मिलें।" उन्होंने अपने अंदर की जेब से कपड़े में लिपटा एक छोटा पैकेट निकाला, "छै महीने पहले क्वो चाची मुझसे मिलने आई थीं और कई दिनों तक मेरे साथ रहीं। हमने खूब बातें कीं। जाने से पहले उन्होंने कहा, 'शायद तुम दोनों के पुनर्स्थापित होने तक मैं जीवित न रहूं।

पर मैं तुम दोनों के लिए प्रार्थना करूंगी।' फिर उन्होंने दो पैकेट निकाले। उन्होंने अपना ताबूत १८० यूवान में बेच दिया था और वह पैसे हमारे लिए बराबर-बराबर लाई थीं..." पी चिङ अपने आंसू न रोक सके।

"हमारी पार्टी हमें नहीं भूलेगी! जनता हमें नहीं भूलेगी! ई रू! हमेशा याद रखना जनता हमारे मां-बाप के समान है।"

उन्होंने पैकेट खोला और ई रू ने देखा कि नब्बे यूवान एक साथ रखे हुए थे। पी पैकेट खोलते हुए कुछ सोच रहे थे।

चलते समय ई रू को आभास हुआ कि पी चिङ कुछ कहना चाहते थे, पर उन्होंने वह बात नहीं कही थी। उन्होंने सिर्फ इतना अनुमान लगाया कि शायद वह याङच्याओनाओ लौटना चाहते हैं। ई रू की नजर निदेशक पी चिङ के सूजे हुए पांव पर पड़ी। उन्होंने कहा, "निदेशक पी, आप अपना भी ख्याल रखें।"

पी ने कहा, "मैं ठीक ही रहूंगा।"

बिछुड़ते समय उन्होंने ६ किलोग्राम अनाज के कूपन अपने पुराने नेता को दिए, यही उनके पास था और फिर बस में बैठ गए। पी चिङ भावुक हो उठे और बोले, "ई रू, पर इसके बिना तुम्हारा काम कैसे चलेगा?"

"चिंता न करें। आप अपना ख्याल रखें!" बस चलने पर उन्होंने हाथ हिलाया।

पी चिङ ने चिल्लाकर कहा, "याद रखना, जनता हमारे काम को कभी नहीं भूलेगी!"

यह पहले की बात थी... अभी जुलाई के मध्य में प्रथा के अनुसार लोग कब्रिस्तान आकर अपने मृत संबंधियों के प्रति आदर व्यक्त करते हैं। शायद इसीलिए निदेशक पी क्वो चाची के मकबरे के पास आए होंगे?

ई रू याङच्याओनाओ गांव के करीब पहुंच गए थे। वे बीस वर्षों से अधिक बाहर रहे थे। वह निश्चित नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें जाकर न्यून्यू से मिलना चाहिए या नहीं। वह एक पत्थर पर बैठकर पुराने परिचित गांव को निहारने लगे। बीस वर्षों तक वे यातायात ब्रिगेड के काम से इधर-उधर भटकते रहे और आखिरकार अब यहां लौट पाए।

वह गांव के एक मकान के अहाते में घुसे। दरवाजे पर ताला लटका था। पास के बेर के पेड़ के छेद में रखी चाबी पर उनकी नजर पड़ी। सब कुछ पहले की ही तरह था। वह चाबी लेकर दरवाजा खोलने ही वाले थे कि उन्हें अहसास हुआ, यह उचित नहीं होगा, क्योंकि यह अब उनका घर नहीं है। पर अंततः उन्होंने दरवाजा खोला और कमरे में गए।

कमरा बिलकुल वैसा ही था, जैसा वह वर्षों पहले छोड़कर गए थे। उन्होंने मेज पर रखी एक पर्ची देखी। पर्ची पर लिखा था, "मैं शिनशिन के साथ क्वो चाची की श्रद्धांजलि के लिए खरीदारी करने जा रही हूं। आपका खाना कड़ाही में रखा है। गर्म कर खा लेंगे। यदि आप प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो क्वो चाची के मकबरे पर आ जाएंगे।"

न्यून्यू ने यह पर्ची अपने पति के लिए लिखी थी। पर्ची की भाषा से यह स्पष्ट था। ई रू पीड़ा के साथ मुस्कराए। उन्होंने क्वो चाची और न्यून्यू के कमरे में झांककर देखा। अंदर कमरे

में कई जोड़े नए जूते रखे थे, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान महिला मुक्ति मोर्चे द्वारा सैनिकों के लिए ऐसे ही जूते बनाए जाते थे।

वह अंदर कमरे में गए और खाङ के पास खड़े होकर उन्होंने गौर से जूतों को देखा। सभी जूते एक ही आकार और नाप के थे। सभी जूतों पर बनाए जाने का वर्ष लिखा देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ : १९५७, १९५८, १९५९...। उन्होंने जूतों की गिनती की। कुल बाईस जोड़ी जूते थे। भावावेश में वह बेहोश होते-होते बचे। हाथ के झटके से कड़ाही का ढक्कन गिर गया। कड़ाही में रखा शकरकंद अभी भी गर्म था, चूल्हे पर भी एक पर्ची पड़ी थी :

पापा,

यह वही शहद से भी मीठा शकरकंद है, जिसे आप बहुत पसंद करते हैं। क्या आपको इसका नाम मालूम है? इसे न्यून्यू कहते हैं।

आपकी बेटी,
शिनशिन

वह बाहर के कमरे में आए, दीवार पर उनकी तस्वीर टंगी थी। यह तस्वीर पानमुनजाम सम्मेलन भवन के सामने खींची गई थी। उन्होंने सेना का कोट पहन रखा था, सिर पर टोपी नहीं थी, बाल मुर्गे की पूंछ की तरह खड़े थे। तस्वीर की बगल में कुशल ट्रैक्टर ड्राइवर की उत्तम सेवा का प्रशस्ति पत्र था। उस पर शिनशिन का नाम लिखा था।

ई रू की समझ में नहीं आया कि क्या करें। वह तेजी से बाहर निकले। पश्चिम में सूर्य डूब रहा था। वह तेजी से लुङथानखओ की ओर बढ़े, शायद क्वो चाची वहीं दफनायी गई हों। लुङथानखओ युद्ध में मारे गए उनके पुत्र और पति को वहीं पहाड़ की चोटी पर युद्ध मैदान के पास ही दफनाया गया था। वह अपनी पत्नी से मिलने जा रहे थे, हताश होकर इंतजार करती जिस पत्नी ने बाईस जोड़ी जूते सिले थे। वह अपनी ट्रैक्टर ड्राइवर बेटी से मिलने जा रहे थे और क्वो चाची की कब्र पर जा रहे थे—हां, क्वो चाची, जो उनकी मां के समान थीं। अब उनकी समझ में आया, उन्हें कोई चिंता न हो और मन लगाकर काम कर सकें, शायद इसी कारण क्वो चाची ने पी चिङ को यह बताने से मना कर दिया था कि उनकी पत्नी और उनके जाने के बाद जन्मी बेटी उनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। मां की तरह उन्होंने न्यून्यू और उनको अपने बच्चों की तरह पाला था। कितनी दुख की बात है, आज वह दोनों का पुनर्मिलन देखने के लिए जीवित नहीं हैं। शाम का सूरज अपनी हल्की किरणें पहाड़ी पर बिखेर रहा था। ई रू लुङथानखओ पहुंचे।

उस दिन पूर्णिमा थी। सूरज डूब गया था और पूर्णिमा का गोल चांद पूरब से निकल रहा था। शाम गहराने के साथ-साथ धुंधलका बढ़ता गया। ई रू क्वो चाची की कब्र खोज रहे थे कि किसी ने पुकारा, ''पापा!'' शिनशिन उनकी तरफ दौड़ी आ रही थी। न्यून्यू एक कब्र के पास शांत खड़ी थी। मानो वह मन ही मन में बाईस वर्ष पहले बिछुड़ते समय कही अपनी बात दोहरा रही थी, ''आप लौट आएंगे। मैं जानती हूं, आप जरूर लौटेंगे!''

शिनशिन ने फुसफुसाकर कहा, "पापा! कल मां की हिम्मत नहीं हुई कि आपसे बात करे। उसने मुझे बाद में बताया कि आप बिलकुल नहीं बदले हैं!"

"ठीक कहा। कैसे बदल सकता था? इसीलिए तुम्हारा नाम शिनशिन रखा, यानी दो दिल एक में!"

अचानक पास से एक आवाज आई, "नहीं, वे कभी नहीं बदलेंगे, अच्छे दिन आने वाले हैं..."

"निदेशक पी!..." लगभग एक साथ ई रू और न्यून्यू ने आश्चर्य से पुकारा।

निदेशक पी तेज कदमों से उनकी तरफ आए। उन्होंने ई रू और न्यून्यू के कंधों पर हाथ रखा और खुशी से मुस्कराए।

अचानक शिनशिन बोली, "पापा! मां! देखो चांद! देखो, चांद को देखो!..." तभी उन्हें नगाड़ों की आवाज सुनाई पड़ी और आतिशबाजी दिखाई पड़ी। लोग चिल्ला रहे थे, "देखो! देखो, चांद को स्वर्ग का कुत्ता निगलने जा रहा है!..."

चंद्रग्रहण लगने वाला था। पहाड़ी क्षेत्र में अंधेरा छाने लगा। छै से सात बजे तक इस परिवार के लोग क्वो चाची की कब्र के पास अंधेरे में बैठे रहे।

सवा सात बजे चांद फिर से प्रकट हुआ, शिनशिन की आंखों पर चांद की हल्की किरण पड़ रही थी।

साढ़े आठ बजे चांद खिल उठा। आज का चांद अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक रौशन था। शिनशिन खुशी से उछल पड़ी, उसने चिल्लाकर कहा, "सब समाप्त हो गया! हमें फिर से चांदनी मिल गई!" शायद वह कब्र में पड़ी अपनी दादी को अपनी खुशी बताना चाहती थी।

हां, वह एक सुंदर रात थी और अगले दिन के सुंदर और प्रकाशमान होने का विश्वास दिला रही थी।